पंचकुला का २५१ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ : यज्ञ-चिकित्सा का अद्भुत प्रयोग

आज के भौतिकवादी समाज की पहली चाह है निरोगी काया। धन-दौलत का अंबार है, लेकिन उसके उपयोग की तो क्या कहें, उपभोग की सामर्थ्य भी मनुष्य खोता जा रहा है। चारों ओर से हताश-निराश मानव सुख-शांति की कामना से भगवान के द्वार पर भी दस्तक दे रहा है, लेकिन भक्ति का सही स्वरूप नहीं जानने के कारण वहाँ भी उसकी मनोकामना पूरी होती दिखाई नहीं देती।

गायत्री परिवार पंचकुला (हरियाणा) की शाखा ने ऐसे समाज को युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव के बताये मार्ग पर चलकर जीवन साधना के लिए प्रेरित करने हेतु विशाल गायत्री महायज्ञ के साथ यज्ञ-चिकित्सा का अद्भुत प्रयोग किया, जिसमें विभिन्न शारीरिक व्याधियों को दूर करने के लिए विशिष्ट हवन सामग्री के साथ यज्ञ करने की व्यवस्था बनायी गयी थी। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य संकाय ने अपने सतत शोध-प्रयोगों के आधार पर तैयार की अलग-अलग रोगों की अलग-अलग हवन सामग्रियों से मरीजों को यज्ञ कराया। कई लोगों ने मात्र तीन दिन के यज्ञोपचार में ही इस यज्ञ-चिकित्सा से बहुत आराम मिलने की बात कही और पूरी तरह स्वस्थ्य हो जाने की आशा जताई।

देसंविवि की डॉ. वंदना श्रीवास्तव एवं डॉ. ज्ञानेश्वर मिश्र, श्री योगीराज एवं साथियों की टोली ने यज्ञ-चिकित्सा इकाई का संचालन किया। वे अपने साथ वातरोग, मोटापा, उच्च रक्तचाप, हृदयरोग, अवसाद, गुर्दे की पथरी, क्षय, मधुमेह, अस्थमा एवं मनोविकारों के निवारण के लिए अलग-अलग औषधियाँ ले गये थे। उन्होंने यज्ञ से पूर्व मरीजों के विभिन्न परीक्षण किये-कराये। एक ही रोग के मरीजों को साथ-साथ एक कुण्ड पर बिठाकर उस रोग के लिए निर्धारित औषधि से तीनों दिन यज्ञ कराया गया। यज्ञ के बाद उन्हें यह क्रम बनाये रखने के लिए वह यज्ञ सामग्री उपलब्ध करायी गयी और रोगी की इच्छा पर काढ़ा सेवन के लिए वनौषधियाँ प्रदान की गयीं। यज्ञ चिकित्सा से लोगों ने शारीरिक मानसिक स्फूर्ति, प्रसन्नता, जकड़न में कमी, जीवनी शक्ति और उत्साह के बढ़ने की बात कही। आरंभ में लोगों को इस उपचार की कल्पना ही नहीं थी। जैसे-जैसे इसका प्रचार हुआ, लाभार्थियों ने अपने समाज में चर्चा की, क्रमशः रोगियों की संख्या बढ़ती ही गयी। ❍

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी दीपयज्ञ के अवसर पर याजकों को संबोधित करते हुए

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्याजी पंचकुला में हुए यज्ञ-चिकित्सा के विशिष्ट प्रयोग में उपस्थित हुए। दीपयज्ञ के अवसर पर उन्होंने उपस्थित जनमानस को संबोधित करते हुए समग्र स्वास्थ्य के लिए जीवन शैली में बदलाव, विचार संयम, सकारात्मक चिंतन, श्रम साधना तथा परिस्थिति को बदलने के लिए मनःस्थिति तैयार करने संबंधी व्यावहारिक चिंतन दिया।

आदरणीय डॉ. प्रणव जी ने भौतिकता के शिखर पर पहुँचे, किंतु रोग, शोक, तनाव और अवसाद से घिरे आज के समाज को अर्जुन की तरह कायर एवं किंकर्त्तव्यविमूढ़ बताया। उन्होंने कहा कि अध्यात्म में अपार वैभव भरा है। मानवीय काया में विलक्षण क्षमताएँ भरी पड़ी हैं। लेकिन भौतिकता की चकाचौंध में खो गया मानव इस ओर ध्यान ही नहीं देता और दुःख पाता है। वह अपनी क्षमताओं को पहचान ही नहीं पा रहा और उन्हें क्षीण करता जा रहा है।

पू. गुरुदेव का संदेश देते हुए आदरणीय डॉ. साहब ने बताया कि हमारे ऋषि उच्च कोटि के वैज्ञानिक थे, जो शरीर में छिपे ज्ञान-विज्ञान को जगाकर उसे उच्च शक्तिशाली बनाते थे। आज तो संवेदनाएँ सूख रही हैं। लोग संकीर्ण और कायर बनते जा रहे हैं। वे कभी सामूहिकता में जीकर तो देखें, समूह में सबके हित की कामना करके तो देखें। दुःखियों के आँसू पोंछकर और उनके घाव पर मरहम लगाकर तो देखें; वे समाज से इतना सम्मान पायेंगे कि क्लेश, तनाव, दुःख का नामोनिशान ही मिट जायेगा।

पंचकुला का यज्ञ-चिकित्सा प्रधान २५१ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सेक्टर ५ में दिनांक १७ से २० जनवरी २००८ की तारीखों में संपन्न हुआ। इसके संचालन के लिए शांतिकुंज से डॉ. ओ.पी. शर्मा, श्री सुनील शर्मा, श्री रमाकांत खरे एवं संगीतज्ञों की टोली पहुँची थी। डॉ. शर्मा ने यज्ञीय टिप्पणियों एवं अपने प्रवचनों में यज्ञ के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों को वैज्ञानिक आधार पर समझा कर लोगों में गायत्री उपासना और यज्ञ का उत्साह जगाया।

यज्ञ स्थल पर परम पूज्य गुरुदेव के जीवन दर्शन और उनके मिशन पर एक विशाल प्रदर्शनी लगायी गयी थी।

५०१ कलशों की कलश यात्रा के समय जैसे ही वरुण देवता का आवाहन किया गया, वर्षा आरंभ हो गयी। लोगों ने इसे यज्ञ एवं मंत्रशक्ति का प्रभाव मानकर जोरदार ढंड में भी भीगते हुए बड़े उत्साह के साथ कलश यात्रा पूरी की। अगले दिन देव आवाहन के समय भी वर्षा हुई।

पूर्णाहुति के दिन आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने गुरुतत्व की महिमा का मार्मिक वर्णन किया और सद्गुरु वरण की प्रेरणा दी, दीक्षा दिलायी। कार्यक्रम में पंजाब, हरियाणा, हिमांचल, उत्तर प्रदेश एवं उत्तरांचल के कार्यकर्त्ता सैकड़ों की संख्या में उपस्थित थे। युगऋषि के युगनिर्माण आन्दोलन के लिए पूर्णतः समर्पित एवं कार्यक्रम के संयोजक श्री चंद्रमोहन शर्मा के साथ उन सबने कंधे से कंधा मिलाते हुए आयोजन की सफलता में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। ❍

अतिथि महानुभावों ने बढ़ाई महायज्ञ की गरिमा

पंचकुला के महायज्ञ में न्यायमूर्ति प्रीतम पाल पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय, श्री पवन कुमार बंसल-मंत्री (फाइनेंस), भारत सरकार तथा श्री कमल शर्मा-एडवोकेट जनरल हरियाण सरकार मुख्य अतिथि थे।

मंचासीन माननीय श्री पवन कुमार बंसल, उनकी धर्मपत्नी, श्रीमती पाल एवं न्यायमूर्ति श्री प्रीतम पाल तथा आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

न्यायमूर्ति की प्रीतम पाल :- मैं पिछले २५ वर्षों से यज्ञ कर रहा हूँ। जिन्हें सुख-शांति चाहिए, वे नियमित यज्ञ करें।

श्री पवन कुमार बंसल-मंत्री, भारत सरकार :- १६ वर्ष पहले डॉ. प्रणव जी से मेरी मुलाकात हुई थी। उस समय उनसे सुने अध्यात्म-विज्ञान के समन्वय के विचारों को मैंने संजोकर रखा है। पू. गुरुदेव के साहित्य में हर समस्या का समाधान विद्यमान है। उनके विचारों से सारे विश्व को बदला जा सकता है। ❍

मालवा-निमाड़ में चल पड़ा नारी जागरण का जोरदार अभियान

महू, इन्दौर (मध्य प्रदेश)

२२ एवं २३ दिसम्बर की तारीखों में महू में उप जोन स्तरीय विशाल नारी जागरण सम्मेलन सम्पन्न हुआ। मध्य प्रदेश से आरंभ हुए युवा चेतना जागरण अभियान की भाँति ही मालवा-निमाड़ क्षेत्र ने नारी सशक्तीकरण के एक नये अभियान का शानदार शुभारंभ किया। इस सम्मेलन में इन्दौर, धार तथा देवास जिलों की बहिनों ने भाग लिया। सम्मेलन में युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी का प्रखर चिंतन लेकर शांतिकुंज से सुश्री दीना बेन त्रिवेदी की टोली पहुँची थी।

इन्दौर उपजोन में नारी सशक्तीकरण की कमान पूरी तरह बहिनों ने ही सँभाली। प्रारंभ में १०८ बहिनें शांतिकुंज आयीं और आदरणीया शैल जीजी से शक्तिकलश प्राप्त करने के साथ इस प्रतिष्ठित अभियान का बीड़ा उठाया। बहिनों ने अपने क्षेत्र में प्रयाज के क्रम में धार, मनावर, पीथमपुर, महू, राऊ, देवास में महिला जागरण संगोष्ठियों का आयोजन किया। २४ बहिनों ने अखण्ड दीप की स्थापना कर उसके समक्ष सवा लाख महामंत्र जप अनुष्ठान सम्पन्न किया।

महू के महिला जागरण सम्मेलन का शुभारंभ ५०१ कलशों की भव्य शोभायात्रा के साथ हुआ। इसमें सम्मिलित बहिनों ने अपने हाथ में दहेज, भ्रूणहत्या, लड़का-लड़की में भेद आदि के खिलाफ पट्टियाँ-बैनर लेकर इनके विरोध में अपनी आवाज सारे नगर में बुलंद की।

मंचीय कार्यक्रमों का शुभारंभ जागृति महिला मण्डल, महू की बहिनों द्वारा शंखनाद के साथ शांतिकुंज की ब्रह्मवादिनी टोली के स्वागत और सुश्री दीना बहिन द्वारा 'नारी जागरण मशाल' प्रज्वलन से हुआ। शांतिकुंज की बहिनों ने अपने संदेश में कहा कि हनुमान, शिवाजी, गाँधी, सुभाष, सीता, अनुसूया जैसी दिव्य आत्माओं को हम इस धरती पर अवतरित करना चाहते हैं तो सबसे पहले माताओं को सुविचारी और सुसंस्कारी बनना होगा। उन्होंने कहा कि बड़े-बड़े पदों पर प्रतिष्ठित होना, फैशन परस्ती अपनाना, धनवान बन जाना ही नारी जागरण नहीं है। यदि नारी को अपनी गरिमा पुनः प्रतिष्ठित करनी है तो उसे माँ शारदामणि, मदर टेरेसा और परम वंदनीया माताजी के व्यक्तित्व का अनुसरण करना होगा। उसे अपने भीतर दया, करुणा, ममता, पवित्रता, परोपकार की भावनाओं को पुष्ट करना होगा।

सुश्री दीना बहिन ने इस सम्मेलन में अपने ओजस्वी वक्तव्य से बहिनों में कन्या भ्रूणहत्या, दहेज, फैशन परस्ती, अश्लीलता के आकर्षण जैसी प्रथाओं के विरोध का उत्साह जगाया। उन्होंने बहिनों को सुसंस्कारी एवं स्वावलम्बी बनने के लिए प्रेरित किया और संकल्प दिलाये।

कार्यक्रम की पूर्णाहुति १००१ दीपों के दीपयज्ञ के साथ हुई। इस अवसर पर उपस्थित १५०० बहिनों ने अभियान को सतत गतिशील रखने का संकल्प व्यक्त किया। संयोजिका श्रीमती लक्ष्मी उपाध्याय, श्रीमती निर्मला चौहान, श्रीमती बाबर, किरण सिसोदिया आदि ने धार जिले की बहिनों-श्रीमती साधना पारे, श्रीमती शकुंतला शर्मा, सुनीता भाटिया, ब्रजलता विजयवर्गीय, श्रीमती सरिता शास्त्री, निर्मला राठौड़ आदि को अगले सम्मेलन का दायित्व सौंपते हुए विचार क्रांति की लाल मशाल हस्तांतरित की।

महू के नारी जागरण सम्मेलन में धार जिले को मशाल हस्तांतरण के उल्लास भरे क्षण

सेवा का सम्मान

महू के महिला जागृति सम्मेलन में सेवा का आदर्श प्रस्तुत करने वाली दो बहिनों को मंच से शॉल-श्रीफल के साथ सम्मानित किया गया। वयोवृद्ध समाजसेवी बहिन श्रीमती देविका रानी तथा अपने बीमार पति की बड़े मनोयोग से सेवा करने वाली बहिन श्रीमती वंदना मिश्रा को यह सम्मान प्रदान किया गया।

अनुयाज-२४ दिसंबर को कार्यक्रम के अनुयाज के रूप में धार में महिला सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका संचालन शांतिकुंज की ब्रह्मवादिनी बहिनों ने किया। सम्मेलन में लगभग ३०० बहिनों ने भाग लिया। ❍

५८ वाँ गणतंत्र दिवस ..

पृष्ठ १ से आगे ....

समक्ष आयोजित हुआ। इस अवसर पर कुलपति, कुलसचिव, डीन, अधिकारी, आचार्य, हजारों विद्यार्थी, दर्शनार्थी उपस्थित थे। कुलाधिपति महोदय ने विद्यार्थियों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में उभरे उत्साह एवं संकल्पों की मुक्त कंठ से सराहना करते हुए उन्हें राष्ट्र देवता की आराधना में यज्ञ की समिधा बनकर सक्रिय रहने की प्रेरणा प्रदान की। विद्यार्थियों ने जोर शोर से जयकारे लगाकर माँ भारती के सपूत होने का विश्वास दिलाया। ❍

प्रेम ही आत्मा का प्रकाश है। जो इस प्रकाश में जीवन पथ पर अग्रसर होता है उसे संसार शूल नहीं, फूल नजर आता है।